आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे

चित्र : साक्री के -फोटोग्राफर । वर्धा के -विजयकुमार बैले

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा साईराम ग्राफीक्स, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	हमारे मानवाधिकार के सरोकार कितने उदार..?	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	७
आंतर भारती - २	बसव वचन	९
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	१०
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	११
कथा भारती - १	संघर्ष और सफलता की गाथा-बराक ओबामा	१२
समाचार भारती-१	पुरस्कार का सम्मान	१३
समाचार भारती-२	सभी को निःशुल्क व अच्छी शिक्षा मिलनी जरूरी	१५
समाचार भारती-३	आन्तर भारती बाल आनन्द महोत्सव साक्री	१६
समाचार भारती-४-अ	वर्धा बाल महोत्सव का संक्षिप्त विवरण	२३
समाचार भारती-४-ब	१४ वें बाल महोत्सव की शानदार शुरुआत बालकों में राष्ट्रप्रेम जागृत करें : डा.सुब्बराव	२७
समाचार भारती-५	श्री नरेन्द्र वडगावकर का डा.एस.एन.सुब्बराव राष्ट्रीय समाज सेवा अवार्ड से सम्मान	२८
विशेष आलेख - १	साने गुरुजी का स्मरण	२९
समाचार भारती-६	काउंटर थ्योरी से सुरक्षित नहीं देश	३०
पत्र भारती-१		३३
काल परिक्रमा -	दिसम्बर २०१३	३४

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com
लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

हमारे मानवाधिकार के सरोकार कितने उदार..?

यह अक्सर कहा जाता है कि उदारचरित व्यक्तियों के लिए समूचा संसार ही एक परिवार है. शायद इसी दृष्टि से भारतीय चिंतन परंपरा में वसुधैव कुटुंबकम की परिकल्पना पनपती रही है. आज जब हम भूमंडलीकरण के परिणामों के रूप में वैश्विक गाँव' की परिकल्पना को भले ही साकार होते महसूस करते हैं, मगर इसके मूल स्वरूप में वह सहज मानवीयता नज़र नहीं आती, क्योंकि उसकी दृष्टि में मानव कोई व्यक्ति नहीं मगर निरा उपभोक्ता है. इसी परिप्रेक्ष्य में दुनिया का वर्तमान स्वरूप परिवार' का नहीं मगर बाज़ार' बनने का आरोप हर किसी चिंतक की वाणी के संवेदनात्मक स्वर में प्रस्फुटित होता है.

मानवाधिकार क्या इस दुनिया के उस नेकी की संज्ञा है, जो इन्सान को इन्सान के रूप में देखने की उदारता से जुड़ी है या उक्त समालोचित भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में विकसित वैश्विक गाँव' की भांति परिवार की संकल्पना की जगह घर करता बाज़ार' है ? इन्सानियत के प्रति घातक प्रवृत्ति को अपने में छिपाकर यह समाज, समुदाय या देश अथवा दुनिया किसी रूप में इन्सान को जियो और जीनो दो का पाठ पढ़ा सकता है ? आदमी कुपढ़ हो अथवा कुफ़राना वह आदमी बनकर जीता है तो उससे समाज के लिए कोई खतरा नहीं, न ही दूसरे किसी इन्सान के सार्थक अस्तित्व के लिए उसका कोई कुनह नज़र आता है. इस कुदरती दुनिया में इन्सान कुनहीं क्यों बन रहा है, यही इन्सानियत के समक्ष सबसे बड़ा सवाल है.

मानवाधिकार' शब्द अख़बार के पहले पन्नों का आम शब्द बनने का उछाल उस समय आया, जब पिछले परवाड़े (नवंबर, २०१३) के पहले परवाड़े में) श्रीलंका में राष्ट्र मंडल देशों के शासन प्रमुखों की बैठक आयोजित होने जा रही थी. बैठक पूर्व, बैठक के पश्चात भी इसी शब्द के साथ अखबारों के पन्नों का ज्यादा नाता बनता रहा क्योंकि कई वाणियों में मानवाधिकार लफ़्ज के हथगोले से बल्लेबाजी जारी थी. अब बैठक की बात खत्म होती ही सब कुछ ठंडा पड़ गया है और मानवाधिकार की चिंता गायब सी नज़र आ रही है.

यह मुद्दा तब बना जब श्रीलंका में प्रस्तावित राष्ट्रमंडल देशों के प्रधानों की बैठक में भारत के प्रतिनिधित्व की बात उठी. दक्षिण में ख़ासकर तमिलनाडु और

पुदुचेरी में दरबदर श्रीलंका में तमिल के विरोध में अत्याचारों के खिलाफ़ उठती आवाज़ आंदोलन का रूप लेने लगी थी. श्रीलंका में तमिल ईलम के विरुद्ध लड़ाई के अंतिम चरण में कथित मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोप को लेकर यह तूफ़ान मचने लगा था. अंब शांत पड़ गया है. बैठक के दौरान और पश्चात भी ब्रिटन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरन की इस दलील को लेकर कि श्रीलंका में मानवाधिकार उल्लंघन के मामलों की जाँच के लिए एक आयोग गठित करें, श्रीलंका के अध्यक्ष महिंद राजपक्सा ने इस चेतावनी को खारिज किया कि कोई उन पर दरयाफ़्त' के फरमान का डंडा नहीं चला सकते हैं दरख्वास्त' भर ही तो कर सकते हैं. उन्होंने यह भी कहा कि श्रीलंका की सांस्कृतिक परंपरानुसार आयु बोवन शब्दों के साथ राज हो या रंक, हर किसी का स्वागत किया जाता है, जिसका का अर्थ है दीर्घ जीवी बनो. श्रीलंका हो या दुनिया के कोई देश या इलाका हो इन्सानियत में आयु बोवन की सच्ची व्यावहारिक आकांक्षा और बर्ताव की प्रवृत्ति खत्म हो जाए, मानवीय मूल्यों के लिए कोई खतरा नहीं होगा.

वास्तव में लड़ाई-झगड़े व युद्ध का माहौल इन्सान व इन्सानियत के लिए हमेशा ही बड़ा खतरा है. श्रीलंका में तमिल भाषियों को इस ख़तरे से जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई किसी भी दरयाफ़्त से यह दुनिया नहीं कर पाएगी, इसमें दो राय नहीं हैं. युद्ध की विभीषिका ही सर्वनाश और सत्यनाश की प्रवृत्ति के प्रकोप से बढ़ती जाती है, जिस दौरान इन्सानियत की खबर कोई नहीं ले सकते हैं, श्रीलंका में भी यही हुआ था और इसकी पुष्टि ३१ मार्च २०११ को प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में संयुक्त राष्ट्र महा-सचिव की विशेषज्ञ समति की रिपोर्ट ने यह स्पष्ट कर दी थी कि वहाँ कई रूपों में मानवाधिकारों का उल्लंघन हुआ है.

मानवाधिकार की अवधारणा राज्य सत्ता द्वारा प्रतिपादित, अंतर्राष्ट्रीय स्तर की धारणाओं, संधियों, करारों, समझौतों के आधार पर अपनाई गई रीति, नीति बन जाती हो और वह केवल किसी अधिनियम द्वारा परिभाषित होने के आधार पर ही समझी जाती हो तो यकीनन वह उदार हो, यह ज़रूरी नहीं है.

प्राण, स्वतंत्रता व समता को मानव मूल्यों के रूप में मानने से उसे कोई अधिकार बनाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती है. हर इन्सान यदि दूसरे के प्रति इन्सानियत के साथ पेश आए तो इस अधिकार का सवाल ही उठता नहीं.

(शेष पृष्ठ ८ पर)

तुकाम्हणे

(मराठी)

बरें जालें देवा निघाले दिवाळें

बरें जालें देवा निघाले दिवाळें । वरी या दुष्काळें पीडा केली ॥ध्रु॥
अनुतापें तुझें राहिलें चिंतन । जाला हो वमन संवसार ॥१॥
बरें जालें देवा बाईला कर्कशा । वरी हे दुर्दशा जनामध्यें ॥२॥
बरें जालें जगीं पावलों अपमान । बरें गेलें धन ढोरें गुरें ॥३॥
बरें जालें नाहीं धरिली लोकलाज । बरा आलो तुज शरण देवा ॥४॥
बरें जालें तुझें केलें देवाईल । लेंकरें बाईल उपेक्षिलीं ॥५॥
तुका म्हणे बरें व्रत एकादशी । केलें उपवासीं जागरण ॥६॥

हिन्दी भावानुवाद :

'दुख ने किये उपकार घनेरे'

भला हुआ, निकला जो दिवाला, तेरा ध्यान तो मन में आया।
इस भीषण दुष्काल ने आकर घोर विपद से मुझे बचाया ॥१॥
पश्चात्ताप से मन में तेरी स्मृति तो जागृत हो आयी है ।
घर-दुआर ते चित्त हट गया, देख उसे मतली आती है ॥२॥
भला हुआ जो मेरी लुगाई, निकली कर्कशा, कटुभाषिणी ।
भला हुआ जो जनसमाज में होती रही दुर्दशा मेरी ॥३॥
पाया जो अपमान जगत में, यह भी भला हुआ, हे विठ्ठल ।
टूटा घर और मरे ढोर भी, हुआ भला ही यह भी, विठ्ठल ॥४॥
जग से लाज-सरम ना मानी, तेरा ही ध्यान धरा, रे विठ्ठल ।
इसीलिए मैं तेरी शरण में, आ पाया हूँ, मेरे विठ्ठल ॥५॥
मंदिर बनवाया ग्राम में, यह भी भला हुआ, हे विठ्ठल ।
की जो उपेक्षा स्त्री-बच्चों की, यह भी भला हुआ, हे विठ्ठल ॥६
तुका कहे व्रत एकादशी का, करता रहा हूँ, मैं जीवन भर ।
कर उपवास, जागरण कर के, तुझे न बिसराया है पल भर ॥७॥

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्यानगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

Thank God I was made bankrupt

Baren zale devaa nighaalen divaalen

It is a blessing indeed that the drought brought in suffering;
Just like the bankruptcy that enveloped me.
This worldly life becomes nauseating,
And I am ever contmplating on Your Divinity

My God ! It is good that my wife is impossible;
just as I am looked down upon by the people.
It is good that I have been insulted.
Now that I have lost all money, animal wealth and all else.

Since I craved not for people's appreciation.
I could surrender myself at your feet.
It is good that You are enthroned in the temple.
And You escaped the neglect from me,
That my wife and children had to face.
Says TUKA, that is observing the ritual of Ekadashi
By following fasting and penance.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

(पृष्ठ ६ से आगे.....) मगर संप्रदाय, जाति, वर्ग, दल, ऊँच-नीच का भेदभाव, महिला व बाल उत्पीड़न आदि कई विडंबनात्मक भेदभावपूर्ण प्रवृत्तियों की वजह से इन्सानियत को हर पल ख़तरे से वास्ता लेना पड़ रहा है. इन सबसे बढ़कर बढ़ते भ्रष्टाचार के आलोक में खुले आम इन्सानियत के समक्ष इन्सानियत के गायब होने का खतारा खड़ा हुआ है, इस ओर न हमारी चेतना यकीनन बढ़ रही है, न ही इससे मानव मूल्यों के या तथाकथित मानवाधिकारों के हनन के दायरे में मानने की चिंता किसी की नज़र नहीं आ रही है. मानवीयता' की सूक्ष्म अवधारणा से जितनी दूर हम हटते जाते हैं. मानव उतना ही उपेक्षित होता जाता है. इसका दोष हम बदलती परिस्थितियों को देते रह जाएंगे तो इन्सानियत' दक़ियानूसी साबित होती रहेगी.

क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

- डॉ. सी. जय शंकर बाबु

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -

आरू मुनिदु एम्मनेनु माडुवरू ?
अरू मुनिदु नम्मनेंनु माडुवदु ?
नम्म कुलिगे कूसु कोड बेड
नमा सोणगंगे तळिनेयल्लाक्क बेड
आर्नेय मेले होहन श्वान कन्य बहुदे ?
नमगे नम्म कूडल संगय्य नुळुक्क.

हिंदी काव्यानुवाद :-

कोई रूठे हमारा क्या करेंगे ?
गाव रुठा तो उसका हमें क्या ?
हमारे कुत्ते के पिल्ले को पिल्ले मत दो
हमारे कुत्ते को कुत्ती का संग नहीं चाहिए
हाथी परसे चलनेवाले को क्या कुत्ता काट पायेगा ?
कूडल संगम देव की करुणा जब तक रहेगी

भाष्य -

महात्मा बसवण्णा न्याय नीतिनुसरण करनेवाले थे. संसार में जो सत्य के पक्ष में होते हैं उन्हें किसी का भय नहीं होता. संत कबीर भी अपने एक पद्य बंध में कहते हैं, ''हमारा यार है इनमें हमें दुनिया से यारी क्या?'' सारी दुनिया एक ओर और ईश्वर की कृपा एक ओर. सत्य का पक्ष, ईश्वर का साथ होना है. सत्यवादी हाथी जितनी ऊंचाई पर होता है उसके सामने असत्यवादी इतने बौने होते हैं कि बौखलहट के सिवा वे कुछ नहीं कर सकते. सिर्फ निंदा करते रहते हैं. जिनकी निंदा की जाती है उनका कोई नुकसान नहीं होता.

इस वचन से हमें यह सीख मिलती है कि सत्य की राह चलनवाले को किसी का खौफ नहीं होता. सत्य के रूप में ईश्वर ही उनके साथ होता है. अतः मनुष्य को चाहिए कि वह भी सचाई की राह चले.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्ऱवियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्याय ५. इल्वाळ्क्कै (गृहस्थ-जीवन)

तेन्पुलत्तार् देय्वम् विरुन्दोक्कल् तानेन्ऱाङ्गु
ऐम्पुलत्तारु ओम्बल् तलै । (कुरल - ४३)

ईश, पूर्वज
अतिथि, बंधु-धर्म
गृहस्थ-कर्म

भावार्थ - ईश्वर, पूर्वज, अतिथि, बंधु सेवा-धर्म का पालन करना ही गृहस्थ का सत्कर्म है ।

पळिय़ंजिप् पात्तूण् उडैत्तायिन् वाळ्क्कै
वळिएञ्जल् एञ्ञान्ऱुम् इल् । (कुरल - ४४)

पाप विहीन
कमाई, बांट खाये,
वंश-वर्द्धन

भावार्थ - गृहस्थ पाप-रहित कमाई करें और उसका उपभोग सबके साथ बांट कर करें तो उसका वंश फलता-फूलता रहेगा ।

संघर्ष और सफलता की गाथा

बराक ओबामा

- डॉ.विद्या केशव चिटको

(गतांक से आगे...)

अध्यक्षीय चुनाव

अध्यक्षीय चुनाव के लिए उस कतार में दिग्गज, राजनीति में निपुण, योजनाओं को स्वीकारते हुए अनुभव में ज्येष्ठ और श्रेष्ठ ऐसे लोग थे. सबकी अपनी हस्ती थी जिसमें -

ओहियो से डेन्निस कुसिनिच, नार्थ करोलिना से जान एडवर्ड, डेलावेर से जो बैडन, कंटिकट से क्रिस्टोफर डूड, लोवा से थॉमस विसलसाक, अलस्का से मैक ग्रावेल, न्यूयार्क से हिल्लारी रोधम क्लिंटन

ओबामा, हिलरी क्लिंटन की तुलना में फंड रेजिंग में कहां पूरा पड़ता ? शुरु में तो वह हिलरी से बहुत पीछे रहा परन्तु दूसरे दौर में हिलरी के २७ डॉलर मिलियन की तुलना में ३२.५ डॉलर मिलियन की स्थिति में ओबामा ने लोवा सिसकस से जीत हासिल की. ४ नवम्बर २००८ बराक ओबामा यू.एस.ए. का ४४ वां अध्यक्ष चुना गया. अध्यक्षीय चुनाव में विजय के लिए ५३८ मतों में से २७० प्राप्त करना आवश्यक होता है. ओबामा को ३४९ वोट मिले जबकि मेक केरन को केवल १६२ वोट प्राप्त हुए. संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अध्यक्ष बराक ओबामा सिर्फ ४७ वर्ष का रहा. शिकागो में ग्रांड पार्क में अपनी पत्नी मिशेल और दोनों बेटियों के साथ, १२५००० प्रेक्षकों ने और पूरे विश्व ने टी.वी.पर संयुक्त राष्ट्र के अगले प्रथम परिवार के सीनेटर ओबामा भाषण - मंच की ओर अकेले चला गया और उसने अपने वक्तव्य में कहा - मेरी दोनों बच्चियों को कुछ ही दिन पहले (मेरी बेटियों को) एक कुतिया मिल गई और वे अब उसका

(शेष पृष्ठ २८ पर...)

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

नासिक

शूर्पणखा को लखवन ने विकृत किया ज्ञातव्य ।
इसीलिए इस जगह का हो 'नासिक' आह्वय॥
'रामकुंड' के पास है चैत्यों की भरमार ।
सीता लक्ष्मण कुंड में पथिकों की भरमार ॥

पंचवटी

पंचवटी में सियराम लखवन रहे चिरकाल ।
पंचवट घर पंचवटी, इस में हैं तरूजाल ॥

अजंता

अजंता की गुफाएँ हि, भित्ति चित्र समवेत ।
विहारगृहयुत गुफाएँ, चैत्यों से समवेत ।
विशाल प्रतिमा बुद्ध की, दर्शन करने योग्य ।
रचित चित्र दीवार पर, निहार करने योग्य ।
रण थल 'अंगाई किला' विदर्भ नज़दीक ।
अब इस गढ़ की राह खराब नहिं रमनीक ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली,
ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६०००००५.

पुरस्कार का सम्मान

अमरावती के ''आम्ही सारे'' इस व्यासपीठ ने इस वर्ष के पुरस्कार के लिए अंबाजोगाई के सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार, लेखक तथा एक जिंदादिल व्यक्ति श्री अमर हबीब का चुनाव कर इस पुरस्कार को एक अलग ऊंचाई पर पहुंचा दिया. अमर हबीब हमारे नजदीक के स्नेही होने की वजह से यह चुनाव कितना योग्य व सार्थक है यह हम जानते हैं. उनके अष्ट पहलू वाले व्यक्तिमत्व का सबको परिचय होने का कोई कारण नहीं. कोई उन्हें संवेदनशील मनुष्य कहकर, कोई लेखक कहकर, कोई कार्यकर्ता, कोई विचारवंत, कोई संपादक तो कोई प्रकाशक कहकर उनको पहचानते हैं. संघर्ष वाहिनी के राष्ट्रीय संयोजक, शेतकरी संघटना के नेता, स्वतंत्र व्यावसायिक पत्रकार तथा प्रसिद्ध वक्ता यह उनकी पहचान अधिक व्यापक है. इस रूप में उन्हें ज्यादा लोगों ने देखा है. इसके अलावा 'मित्र' के रूप में जिन्हें मिले हैं उनके लिए बड़े भाग्य की बात है यह भाग्य भी देश भर में अनेकों को मिला है. अमर ये असली विद्रोही, क्रांतिकारक, जन्म, से मिली हुई किसी भी बात का अभिमान मानना गलत है ऐसा माननेवाले हैं. इसके विपरीत उन्होंने ऐसी अनेक बातें अपना लीं जिसका हम जैसों को गर्व होता है. मुस्लिम परिवार में पैदा होने के बावजूद मराठी भाषा पर उत्तम प्रभुत्व प्राप्त किया. उनकी रचना जितनी विचार प्रवर्तक, सरल, पठनीय है उतनी ही वक्तृत्वकला भी हृदयस्पर्शी, बुद्धि को झनझनानेवाली होती है. वे सदा नया लिखते, बोलते रहते है. वैचारिकता उनके रक्त में है. प्रत्येक विषय की ओर वे तर्क युक्त पद्धती से देखते हैं. वैसाही विचार प्रस्तुत करते हैं. वे केवल बोलने के लिए नहीं बोलते उनका जीना भी वैसाही होता है. किसान के घर में जन्मेनहीं परन्तु किसान आन्दोलन के लिए जो योगदान दिया है वह एक मील का पत्थर बनगया है. किसान समाज का बड़ा उत्पादक

घटक है. उनका दुःख दरिद्रता दूर होने परसमाज प्रगति कर सकेगा ऐसा उनका मत है. इसीलिए ३० वर्ष से अधिक काल से वे इस आन्दोलन में सक्रिय हैं. लेखन तथा भाषण के माध्यम से किसानों के प्रश्नों को सामने प्रस्तुत करने का काम कर रहे हैं. परिस्थिति कितनी भी निराशाजनक हो तो क्या उसकी तरफ सकारात्मक दृष्टि से देखने की भूमिका की वजहसे अनेक लोगों को जीने की प्रेरणा मिली. पत्रकार रूप में उन्होंने सदा पहरेदार की भूमिका निभाई. महत्वपूर्ण विषयों पर उनका लेखन अनेकों के लिए मार्गदर्शक रहा है. इसीजिए आज कई पत्रकार उन्हें गुरू, अग्रण्य मानते हैं. अमर हबीब को स्वतंत्रता बहुत प्रिय है. अपनी जिम्मेदारियां पूरी करते हुए स्वतंत्र कैसे जी सकते हैं इसका एक आदर्श उदाहरण है. अमर हबीब आज कइयों के लिए भरोसेमन्द हैं. आधार हैं. देश में अभी भी कुछ अच्छाई छिपी हुई है, यह अमर की तरफ देखने से भरोसा होता है. 'फल की अपेक्षा न करते हुए कार्य करते रहो : यह गीता का तत्वज्ञान कहने में आसान है पर यथार्थ में कठिन है. अमर का जीवन इसी तत्वज्ञान जैसा है. कुछ मिलने के लिए वे कुछ करते हैं ऐसा हमें कभी नहीं लगा. अमर हबीब ये सही अर्थ में समाज के लिए दीपस्तम्भ हैं. उनके स्वीकारे मार्गपर सब चलने लगें तो भारत में एक आदर्श समाज का निर्माण हो सकता है. अमरावती की संस्था ने उन्हें यह पुरस्कार घोषित करके पुरस्कार का सम्मान बढाया है. इस पुरस्कार के लिए अमर हबीब का हम जाहिर अभिनंदन करते हैं. उनको अधिक उत्तम स्वास्थ्य मिले यह शुभ कामना व्यक्त करते हैं.

(अमर हबीब आंतर भारती ट्रस्ट के विश्वस्त व कोषाध्यक्ष भी हैं)

महारुद्र मंगनाळे

हिन्द प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

अमरावती में श्रीमती आशा व श्री अमर हबीब का सम्मान

सम्मान समारोह में दर्शक श्रोतागण

समाचार भारती - २

सभी को निःशुल्क व अच्छी शिक्षा मिलनी जरूरी

- पूर्व विधायक नाना ठाकरे का कथन

भारत में आज समाज के विभिन्न घटकों को विविध प्रकार की शिक्षा मिल रही है. इससे नया चातुर्वर्ण्य निर्माण हुआ है. यह भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के लिए घातक है. इसलिए प्राथमिक के साथ उच्च शिक्षा भी सभी स्तर के बच्चों को अच्छे दर्जे की अनिवार्य और निःशुल्क मिलनी चाहिए. उक्ताशय के विचार अखिल भारतीय समाजवादी अध्यापक सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भूतपूर्व शिक्षक विधायक जे.यू.नाना ठाकरे ने व्यक्त किए.

अनेकान्त स्वाध्याय मंदिर के सभागृह में आयोजित जिलास्तरीय बैठक में वे मार्गदर्शन करते समय बोल रहे थे. प्रमुख अतिथि के रूप में राष्ट्रीय महासचिव विशारवा खैर, कार्याध्यक्ष, राजा महाजन, उपाध्यक्ष एड्.एकनाथ बावणकर, डॉ.गजानन कोठेवार, गजेंद्र सुरकार, मूलचंद जैन, अरुण चवडे आदि उपस्थित थे.

उन्होंने आगे कहा कि जिन-जिन अविकसित देशों ने शिक्षा पर ८ फीसदी राष्ट्रीय आय खर्च की है, उन देशों के युवक बेरोजगार नहीं हैं. भारत में ३ फीसदी से अधिक खर्च नहीं किया जाता है. भारत यदि न्यूनतम ८ फीसदी से अधिक खर्च करता है तो सभी को निःशुल्क व अच्छी शिक्षा मिल सकती है. इस अवसर पर विशारवा खैरे, अध्यक्ष प्रा.शिवाजी इथापे, एड्.एकनाथ बावणकर, प्रा.राजा महाजन, प्रभाकर पुसदकर ने भी अपने विचार व्यक्त किए.

प्रास्तावना गजेंद्र सुरकार ने रखी. इस अवसर पर जिलाध्यक्ष के रूप में ज्ञानेश्वर ढगे, उपाध्यक्ष के रूप में शीला पंचारिया का चयन किया गया. आभार मनोहर पंचारिया ने माना. बैठक में सभी पदाधिकारी उपस्थित थे.

अब अपनी रचनाएँ इस पते पर भेजें

डा.सी.जयशंकर बाबु

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग पांडीच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेठ, पुद्दुच्चेरी - ६०५०१४

चलध्वनि संपर्क : ०९८४३५०८५०६

ईमेल-editorbabuji@gmail.com / वेबसाईट-www.yugmanas.blogspot.com

समाचार भारती - ३

आन्तर भारती बाल आनन्द महोत्सव साक्री

दि. २९, ३०, ३१ अक्तूबर २०१३ : विवरण

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

साक्री तालुका एज्युकेशन सोसायटी, साक्री यह संस्था १९४० से धुळे, नंदूरबार, औरंगाबाद जिले में शिक्षण प्रसार के कार्यकर रही है. शिक्षण के बिना देश की प्रगति हो नहीं सकती इसलिए सब शिक्षणवंचितों को सिरवा, संवार, ज्ञानी बना उनको आदर्श नागरिकता की शिक्षा मिलने की आवश्यकता इस विचार से कर्मवीर आप्पासाहेब शंकरराव चिंधुजी बेडसे ने संस्था का विकास व विस्तार किया. ३० शारवाओं में (विभाग) जीवन, सांस्कृतिक कार्य पिछले ७३ वर्षों से संस्था लगातार कर रही है. संस्था का ध्येय सिर्फ शारवाओं के विस्तारका न होकर गुणवत्ता बढाना है. संस्था का हीरक महोत्सव व संस्था की विविध शारवाओं का रौप्य, व सुवर्ण महौत्सव अनेक उपक्रमों के माध्यम से मनाया गया. अब संस्था संचलित साक्री में नामदेवराव बुधाजीराव 'अहिरराव छात्रालय' का हीरक महोत्सव, श्रीमती वेणुताई शंकरराव बेडसे कन्या छात्रालय का सुवर्ण महोत्सव तथा डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर विद्यालय का रौप्य महोत्सव इन तीनों के परिपूर्ती समारोह के निमित्त दि. २९, ३०, ३१ अक्तूबर २०१३ को आंतर भारती बाल आनन्द महोत्सव २०१३ न्यू इंग्लिश स्कूल, साक्री, जि. धुळे में संपन्न हुआ.

भारत के विविध प्रांतों से आए हुए विद्यार्थियों का संवाद करवाना यह आन्तर भारती का प्रमुख उद्देश्य है. इससे समग्र भारत के दर्शन होते हैं ऐसा साने गुरुजी कहते थे. गुरुजी के इस पवित्र कार्य को आगे ले चलने का कार्य गुरुजी के प्रयत्नशील कार्यकत्ताओं ने किया और कर रहे है. प्रकाशभाई मोहाडीकर, यदुनाथ थत्ते, स्व.चन्द्रकान्त भाई शहा, डा.सुब्बराव भाई जी, सदाविजय

आर्य, नानासाहेब जयवंतराव ठाकरे, नरेन्द्र वडगावकर आदि कार्यकर्ता कर रहे हैं. साक्री में बाल आनन्द महोत्सव हो ऐसी इच्छा कुडचडे (गोवा) में हुई बैठक में रखवा गया उसमें सर्व श्री मा.डॉ.एस.एन.सुब्बारावजी, मा.जयवंत ठाकरे, नरेन्द्र वडगावकर, सदाविजय आर्य की प्रमुख उपस्थिति थी. दि. ४ सितम्बर २०१३ को साक्री में हुई बैठक में कार्यक्रम की रूपरेखा एवं कालावधी निश्चित की गई. योजना बनी और काम की शुरुआत हुई. मध्य में कई बैठकें हुई काम का नियोजन हुआ. शुरु के कामों में परिपत्रक, परिचय पत्र, सूचना पत्र, प्रमुख अतिथियों से सम्पर्क, कमेटी स्थापना ऐसे असंख्य कामों का समावेश था. आन्तर भारती तथा साक्री तालुका एज्युकेशन सोसायटी साक्री के माध्यम से देशभर में बालआन्द महोत्सव का प्रचार-प्रसार व निमंत्रण दिए गए. बच्चों को कलाकौशल का मौका तथा प्रतिभा के आविष्कार का मौका मिले, सृजनशीलता को मंच मिले, वे मनःपूर्वक आनन्द ले सकें ऐसी कल्पक रचना बाल आनन्द महोत्सव में की गई.

आंतर भारती बाल आनन्द महोत्सव न्यू इंग्लिश स्कूल, साक्री, ता.साक्री जिला धुळे के प्रांगण में हुआ. इस प्रांगण में बालशिक्षण, आन्तर भारती आंदोलन, राष्ट्रीय एकात्मता अखंडता तथा समाज की उन्नति के लिए अपना जीवन झोंक देनेवाले स्मरणीय व्यक्तियों के नाम आकर्षक प्रवेशद्वार व नगर बनाए गए, उसमें कर्मवीर आप्पासाहेब बेडसे नगर, हुतात्मा शिरीष कुमार नगर, यदुनाथ थत्ते नगर, पूज्य साने गुरुजी नगर, राजर्षि शाहू महाराज नगर का समवेश था. उसी प्रकार महात्मा गांधी मंच, प्रकाश भाई मोहाडीकर मंच, चंद्रकांत भाई शहा मंच, साथी एस.एम.जोशी मंच, साथी निळु फुले मंच, स्मिता पाटिल मंच भी निर्माण किया गया. इस मंच पर जादू के प्रयोग, सांस्कृतिक विविध गुणदर्शन कार्यक्रम (पपेट शो) कठपुतली, नाटक, सर्प दर्शन, पोस्टर प्रदर्शन, फिल्म शो, कथा कथन इत्यादि का दिन भर आयोजन हुआ.

कौशल्य केन्द्र : – विद्यार्थियों के सुप्त गुणों के प्रगटीकरण के लिए मुक्त मंच मिले इस हेतु से महोत्सव में चित्रकला, शिल्पकला, बोरूकाम,

हस्तकौशल, बुनाई, मिट्टीकाम, कुम्हारकाम, कोलाज, आनन्ददाई कृतीयुक्त खेल इत्यादि ५६ स्टॉल बनाए गये थे. उनमें विद्यार्थियोंने अपनी कला का उस्फूर्तरीति से प्रदर्शन किया, खेलते खेलते, थकते थकते, खाते खाते सीखना बच्चों की सहज व मूल प्रवृत्ति है. खेल और खाना यह दो प्रिय हैं उसके लिए पसन्द के सब खाद्य पदार्थों के स्टॉल बनाए गए थे. इनका संयोजन शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने किया खान्देश की पूरणपोळी, ठेचा, झुणका भाकर से लेकर इडली सांबर तक का मेनू का विद्यार्थी तथा अतिथियों ने आनन्द लिया.

महोत्सव के साने गुरुजी नगर में मुख्य मंच पर तीनों दिन प्रातः ९ बजे झंडावंदन, संचलन, मानवन्दना, स्वागत सत्कार आदि कार्यक्रम हुऐ. राष्ट्रध्वज, और बाल आनन्द महोत्सव के ध्वजोत्तोलन २९-१०-२०१३ को मा. सदाविजय आर्य तथा बुलढाणा की विद्यार्थिनी कु.श्रुति जोशी, दि. ३०-१०-१३ को मा.एस.एन.सुब्बारावजी व बिहार से आई विद्यार्थिनी कु. आसना तथा ३१-१०-१३ को मा.हसनभाई देसाई तथा लातूर जिले की शिक्षिका श्रीमती शारदा बिरादार के हाथ से किया गया.

सामुदायिक राष्ट्रगीत एन.सी.सी., एम.सी.सी., स्काऊट गाईड के दस्तों ने नियमबद्ध संचलन व मानवन्दना दी, हररंग के फूलों से हम सब भारतीय हैं. We shall over come समूहगान तथा शिक्षक विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किए. 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' आदि गीत प्रस्तुत हुए. ''एक सुर एक ताल'' इस कार्यक्रम के अन्तर्गत गंगा, ''आटिंग्या रानात माटींग्या डोंगर'' यह अभिनय गीत विद्यार्थियोंने प्रस्तुत किए. इस संकल्पना के प्रणेता सोमनाथ परब ने विद्यार्थियों का कौतुक तथा अभिनंदन किया.

दि. २९.१०.१३ का कार्यक्रम मा. सदाविजय आर्य दि. ३०.१०.१३ का मा.नानासाहेब जयवंत ठाकरे तथा दि. ३१.१०.१३ का मा.ॲड्.गजेन्द्र भोसले ने प्रास्ताविक किया. बाल आनन्द महोत्सव का भावात्मक स्तर बढे इस हेतु से ''मी साने गुरुजी बोलतोय'' व ''मी महात्मा गांधी बोलतोय'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया. पूज्य साने गुरुजी की भूमिका श्यामनंदन सोनवणे तथा महात्मा

गांधीजी की भूमिका प्राचार्य श्री एस.आर.पाटी सर ने की. उनके आशयपूर्ण निवेदन श्री अविनाश सोनार व श्री राजन पवार ने किया. आए हुए सब मान्यवरों का परिचय स्वागत सत्कार का संयोजन श्री कैलास चव्हाण ने किया. मुख्य मंच पर प्रमुख अतिथि डॉ.एस.एन.सुब्बारावजी (भाईजी), ने गीत और खेलों के माध्यम से बच्चों के साथ भावपूर्ण संवाद किया व सबको प्रोत्साहित किया. उसी के साथ शाहीर लीलाधर हेगडे, सोमनाथ परब, अविनाश पाटील, संजीवनीताई शिसोदे, नरेन्द्र वडगावकर ने विद्यार्थियों से संवाद किया.

स्मरणिका विमोचन : इसी मंच पर

१. ना.बु.अहिरराव छात्रालय - हीरकाश्रम

२. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर विद्यालय - रौप्य शिदोरी

३. वेणुताई कन्या छात्रालय - वेणाई

४. आन्तर भारती बाल आनन्द महोत्सव - रचना भारती

इन चार स्मरणिकाओं के विमोचन मान्यवरों के हाथ से हुए. व तीनों शाखाओं के महोत्सव का विवरण प्रस्तुत किया गया.

महाराष्ट्र तथा बिहार जैसे प्रातों से आए हुए विद्यार्थी शिक्षक व मान्यवर कार्यकर्ताओं को महोत्सव के निवास कक्ष के अतिरिक्त यजमान विद्यार्थी तथा शिक्षकों ने तीन दिन अतिथ्य स्वीकार किया. उन उन परिवारों में रहकर आपसी व्यवहार व आचार विचार की लेनदेन हुई. नए मित्र मिले. नए संबंध बने और इस माध्यम से साने गुरुजी के आन्तर भारती के स्वप्न का कुछ अंश में क्यों नहीं होता सफल होने का समाधान इस महोत्सव ने दिया.

महोत्सव दि. २९ तथा ३० ऑक्टोबर २०१३ को रात्री में आठ बजे विद्यार्थियों के कमाल के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत हुए. उसमें न्यू इंग्लिश स्कूल, साक्री, साक्री के विद्यार्थियोंने नरेंद्र वडगावकर द्वारा निर्देशित तथा मा.एस.एन.सुब्बाराव जी द्वारा प्रस्तुत 'भारत की सन्तान' यह आन्तर भारती का अनोखा कार्यक्रम प्रस्तुत किया. खुद भाईजी एस.एन.सुब्बारावजीने इस

कार्यक्रम का प्रभावी निवेदन तथा गायन किया. यह कार्यक्रम आन्तर भारती बाल आनन्द महोत्सव का परमोच्च बिन्दु था.

मशाल दौड : महोत्सव के प्रचार व प्रसार के लिए तथा सामाजिक समस्या, पर्यावरण, स्त्रीभ्रूण हत्या, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, शौचालय निर्मिती, पटाखे बंदी, प्लास्टिक बंदी, जलसंधारण, वृक्ष संवर्धन इत्यादि विषयों पर प्रबोधन करनेवाली मशाल-दौड़ खोंडामळी, छडवेल कोंडे, धाडणे, मालपुर, शेवाळी से गाँव में फेरी डालती हुई महोत्सव के स्थान पर पहुंची. इसमें पथनाटक, गीत गायन, घोषणा, प्रबोधन पर निवेदन इत्यादि कार्य हुए.

पोस्टर प्रदर्शन : बाल आनन्द महोत्सव में बाल आनन्द नगर के साथी निळुफुले मंचपर राष्ट्रीय एकात्मता, अंधश्रद्धानिर्मूलन, स्त्रीभ्रूण हत्या, राज्य साधन केन्द्र निर्मित ''मला कोणी सांगेल का ?'' आदि विषयों पर प्रबोधन करनेवाले भव्य पोस्टर प्रदर्शन के आयोजन किए गए. भाषण या लेखों के बजाय कुछ रंग रेखाओं के माध्यम से एकाधा विषय सहज सरल करके बताया जा सकता है तथा प्रबोधन कर सकते हैं यह हेतु इस माध्यम से सफल हुआ. विद्यार्थियों के साथ अनेक मान्यवरोंने इस प्रदर्शन का लाभ उठाया.

वाङ्मय प्रदर्शन तथा विक्री : वाचन परंपरा को बढावा देने के लिए, नये साहित्य की पहिचान हो इस हेतु से महोत्सव महोत्सव प्रांगण में साने गुरुजी कथा कथन प्रबोधिनी पुणे, अंध श्रद्धा निर्मूलन समिती तथा कै. जी.एस.अहिरराव ने विविध कविता, गाने, कथा चरित्रादि विषयों की पुस्तकों का प्रदर्शन किया. विद्यार्थियोंने व पालकों ने उसका लाभ उठाया.

खेल, खाना, गाने, विनोदी किस्से, जादू, सिनेमा, प्रदर्शनी, मनःपूर्वक घूमना, मस्ती, इन सब की वजह से यह आन्तर भारती बाल आनन्द महोत्सव विद्यार्थियों के जीवन का अनमोल स्मृति खजाना होगा ऐसा विश्वास होता है. साने गुरुजी के आन्तर भारती के स्वप्न कुछ अंश में साकार करने का प्रयत्न हमने किया यह सबसे बड़ी उपलब्धी इस बाल आनन्द महोत्सव की है. साक्री तालुका एज्युकेशन सोसायटी, साक्री के इतिहास में एक ''सुवर्ण पृष्ठ'' सिद्ध होगा. इस महोत्सव की सफलता के लिए संस्था के परिवार ने अथक परिश्रम लिए.

अगले पृष्ठों पर चित्र देखें व मुखपृष्ठ क्र. ३, ४

साक्री बाल आनंद महोत्सव के चित्र

१) साक्री में 'भारत की संतान' के बच्चों का समूह २) रैली में भाई जी बैल गाडी में बैठे हुए ३) ध्वजवंदन करते हुए भाईजी ४) बच्चे समूह नृत्य करते हुए ५-६) स्काऊट के बच्चे ७) विशेष वेषभूषा में नृत्य करते बच्चे ८) एक विशेष मंच पर बच्चों का कार्यक्रम

१) बच्चों का समूह २) गतिविधियों का अवलोकन करते भाईजी ३) गतिविधियों का अवलोकन करते भाईजी ४) बच्चों द्वारा निर्मित शिल्प ५) एक समूह नृत्य करते बच्चे ६) बच्चे संचलन करते हुए ७) बच्चे संचलन करते हुए ८) फॅन्सी ड्रेस ९) रैली में बच्चे

समाचार भारती - ४ - अ

वर्धा बाल महोत्सव का संक्षिप्त विवरण

दि. ११ नवम्बर को प्रातः कार्यक्रम के अनुसार उद्घाटन होना था पर बाल महोत्सव जिनको समर्पित था वे श्री दत्ता मेघे प्रातः नही आ सकेंगें इसलिए स्थानीय संयोजक उद्घाटन दोपहर में करने वाले थे पर डा. सुब्बरावजी के कहने पर उद्घाटन प्रातः काल ही श्री दत्ता मेघे की अनुपस्थिति में ही किया गया.

दोपहर में श्री दत्ता मेघे का जन्म दिवस मनाया गया. बालमहोत्सव के ४० वर्षों के इतिहास में बाल महोत्सव में पहली बार किसी व्यक्ति का जन्म दिन बच्चों के बीच मनाया गया. श्री दत्ता मेघे ने बच्चों में रुपए बांटे पर एक बालक चि. ओंकार ने रुपए लेने से इंकार कर दिया.

वैसे पूरा बाल महोत्सव श्री मेघे को समर्पित था जहां तहां उन्हीं का नाम दीख रहा था. महोत्सव का नाम वस्तुतः आंतर भारती राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव था पर संयोजकों ने महोत्सव के सुंदर द्वार पर से आंतर भारती नाम मिटाकर दूसरा फलक लगाया. इसपर आंतर भारती की टीम ने ११ नव. को कार्यक्रम का बायकॉट किया और दिनभर उपोषण किया. आंतर भारती के कुछ कार्यकर्त्ता महोत्सव में से लौटकर अपने-अपने ग्राम चले गए. ११ नव. को स्टेज पर ही कार्यक्रम हुए. पू.भाईजी के गीत के सिवा बच्चों के आनन्द के लिए कोई कार्यक्रम नहीं हुआ.

१२ नव. की कार्यक्रम पत्रिका में जो कार्यक्रम था वह न करते हुए केवल भोजन और ग्रुप फोटो हुए क्योंकि श्री दत्ता मेघे ने सभी को दोपहर के भोजन के लिए बुलाया था. उनकी भेजी बसों में बैठकर सब लोग वहां गए. स्वागत का कार्यक्रम हुआ. पू.भाईजी को उन्होंने ५१000/- रु. दिए. चुनिंदा बच्चों के तीन नृत्य हुए. भोजन मिला, समूह चित्र उतरा औरा वहां से लौटकर सर्व धर्म प्रार्थना हुई. बच्चे घर चले गए. इस तरह दो दिन के कार्यक्रम बालक-केंद्रित नहीं रहे श्री मेघे केंद्रित रहे.

१३ नव. को विशिष्ट गतिविधियां होनी थीं पर तदर्थ विशेष शिक्षकों को बुलाया ही नहीं गया बल्कि श्री मोहन गुजरकर की कृपा से उन्हीं के स्कूल के शिक्षकों

ने यथा संभव सहयोग दिया. गतिविधियों के लिए जो कक्ष बनाए थे वे आकार में छोटे, बच्चों को धूप में बिठाने वाले गलत पार्टीशन के थे. गतिविधियों में चित्रकला, कोलाज, क्लाथ पेंटिग, कागज (क्राफ्ट) काम, मिट्टी काम, वाचनालय, कठपुतली, मेंहदी, रांगोली इत्यादि मर्यादित गतिविधियां ही हुईं. पर यह कार्य बाल महोत्सव की आत्मा है. अधिकतर आयोजक इस ओर दुर्लक्ष्य कर बाल महोत्सव में से आनन्द को छीन लेते हैं. पर बच्चों ने अपनी रुचि दिखाई और गतिविधियों में लगे रहे.

दोपहर के भोजन के बाद दूसरे दिन का (१४ नव.की) गतिविधियों के लिए कम पडनेवाले सामान की सूची आयोजकों को दी गई. सामान आ रहा है के चार-पांच आश्वासन १४ नव. की सुबह १० बजे तक मिलते रहे पर सामान नहीं आया और जैसे वैसे गतिविधियां पूरी हुईं. पर आन्तर भारती के कार्यकर्त्ताओं ने फिर से पूरा दिन उपोषण किया.

१४ की शाम को अव्यवस्था के बीच रैली निकली फिर सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए सर्वधर्म प्रार्थना हुई. बच्चे घर गए. बच्चों ने एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम किए और वे आल्हादित भी रहे.

१५ को स्थानीय दर्शनीय स्थल देखने गए गीताई मंदिर, शांतिस्तूप, सेवाग्राम तथा मगन संग्रहालय देखे. दोपहर का भोजन सेवा ग्राम में हुआ. शाम का अल्पाहार मगन संग्रहालय में हुआ.

इस तरह अर्थ केंद्रित, व्यक्ति केंद्रित, लिमिटेड कं. का बालमहोत्सव संपन्न हुआ.

मार्गरक्षी शिक्षकों के रहने की व्यवस्था अच्छी नहीं हुई, मंच के कार्यक्रम ज्यादा हुए. बच्चों को मुक्त प्रतिभा आभिव्यक्ति का अवसर कम मिला.

कई युवा स्वयं सेवकों ने बहुत मन लगाकर श्रम किया.

भोजन का स्तर अच्छा था.

एक पुराने बाल महोत्सव के साथी ने स्पष्ट कहा कि अर्थाभाव में हुआ पहले का बाल महोत्सव इस संपन्न बाल महोत्सव से आठ गुना अच्छा हुआ था.

बार-बार मांगने पर महोत्सव का अहवाल व फोटो संबंधित प्रमुख ने नहीं दिए हमने अपने स्तर पर अहवाल व फोटो प्राप्त किए हैं. लक्ष्मीपूजन की सफलता के लिए आयोजकों को बधाई. **(अगले पृष्ठों पर चित्र देखें व मुखपृष्ठ १-२)**

वर्धा बाल आनंद महोत्सव की गतिविधियों के चित्र

१) बच्चे चित्रकला में व्यस्त २) सिलाई, बुनाई, कढ़ाई करते हुए ३) कागज काम करते हुए ४) बच्चों ने बनाए मिट्टी के शिल्प ५) रंगोली निकालते हुए ६) कागज की टोपियां बनाते हुए ७) फन्सी ड्रेस में बच्चे ८) रंगोली निकालते हुए

१, २, ३, ४) मंच पर नृत्य करते हुए ५) बांबू नृत्य करते हुए मैदान में ६) बच्चों की रैली का एक दृश्य ७) श्री जयवंत मठकर सेवाग्राम में बच्चों से बात करते हुए ८) वर्धा दर्शन मगन संगहालय में संचालिका बोलते हुए

१४ वें बाल महोत्सव की शानदार शुरुआत

बालकों में राष्ट्रप्रेम जागृत करें : डा.सुब्बराव

१२ राज्यों के ९७० बालक हुए शामिल, बाल महोत्सव में विविध कार्यक्रमों का आयोजन

सत्य, अहिंसा, प्रेम में वृद्धि हो व गांधीजी के विचारों का दीप जगमगाए, इस संदेश का भारत के प्रत्येक बालक को अनुसरण कर देशप्रेम जागृत करने का संकल्प लेना चाहिए., उक्ताशय के विचारराष्ट्रीय युवा योजना के संचालक डा.एस.एन.सुब्बाराव ने व्यक्त किए.

१४ वें अंतरराष्ट्रीय बाल महोत्सव का आयोजन दिल्ली व जिला महिला व बाल विकास विभाग तथा दत्ता मेघे साइंटिफिक रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट फांउडेशन की सहायता से किया गया. इसका उद्घाटन सोमवार को वर्धा के जिला क्रीडा संकुल के प्रांगण में हुआ. इस अवसर पर बालकों का मार्गदर्शन करते हुए वे बोल रहे थे. अंतरराष्ट्रीय बाल महोत्सव में १२ राज्य के करीब एक हजार बालक शामिल हुए. भारत की राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ गांधी फॉर टुमारो इस थीम पर बालमोहोत्सव का आयोजन किया गया है.

सांसद दत्ता मेघे के हाथों अंतरराष्ट्रीय बाल महोत्सव का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर विविध राज्यों से आए बालकों के हाथों विभिन्न रंगों के गुब्बारे आसमान में छोड़े गए. मंच पर पूर्व विधायक सागर मेघे, आयोजन समति के अध्यक्ष मुरलीधर बेलरखोडे, जिला महिला व बाल कल्याण विकास अधिकारी मनीषा कुरसंगे, प्राध्यापक मोहन गुजरकर, आशीष गोस्वामी, हरिष इथापे, संजय इंगले तिगांवकर, समीर मेघे आदि उपस्थित थे.

इस अवसर पर १७ राज्यों से आए बालकों ने राष्ट्रीय एकता व अखंडता की शपथ डा.एस.एन. सुब्बाराव की उपस्थिति में ली. सांसद दत्ता मेघे ने बाल महोत्सव के आयोजकों की तारीफ करके मानवधर्म सबसे महान धर्म होने की बात कही. साथ ही प्रा.मोहन गुरजकर ने बाल महोत्सव के आयोजन की जानकारी दी. मुरलीधर बेलरखोडे ने अतिथियों को महात्मा गांधी की प्रतिमा उपहार स्वरूप देकर स्वागत किया. भाग्यश्री बेलरखोडे ने अतिथियों का परिचय करवाया. संचालन संचिन घोडे व आभार आशीर गोस्वामी ने माना.

भाई नरेन्द्र वडगावकर का सम्मान

गत दिनों राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली के पूर्ण समय कार्यकर्ता, भारत की संतान राष्ट्रीय अभिनय गीत के कुशल प्रस्तोता, आंतर भारती राष्ट्रीय बाल महोत्सव के संपर्क / संयोजक, धुळे (महा.) के निवासी सक्रिय युवा कार्यकर्त्ता **श्री नरेन्द्र वडगावकर** को हरियाणा की युवाशक्ति का **डा.एस.एन.सुब्बराव राष्ट्रीय समाज सेवा अवार्ड,** हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री हुड्डा जी के हाथों देकर उन्हें सम्मानित किया गया.

राष्ट्रीय युवा योजना व आंतर भारती के साथियों ने उन्हें हार्दिक बधाई दी है.

(पृष्ठ १२ से...)

पालन-पोषण व्हाइट हाउस में करेंगे. दुनिया जानती है कि उनकी दादी का निधन हो गया और भले ही उन्हें खोना पड़ा, मगर उन्होंने उन सब देखभाल करने वालों की, जो इस समय तक दिवंगत हो चुके थे, उनकी उपस्थिति को महसूस किया और उनके प्रति ऋणी होने का जिक्र किया.

अपने प्रतिस्पर्धी सिनेटर जॉन मैककैन के प्रति, गवर्नर सारा पालिन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की उसके प्रमुख रणनीतिकार डेविड एक्सलोराड, प्रचार प्रबंधक डेविड प्लफ, उसके उपाध्यक्ष जियो बैडेन, पत्नी मिशेल और अपनी प्यारी बच्चियों और सभी अमेरिकी नागरिकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया और कहा कि अमेरिका के नागरिकों के लिए अपने जीवन समय के लिए यह सबसे बड़ी चुनौति है.

नव वर्ष के पूर्व ही नवीन हर्ष का उल्लास मनाया गया. रोशनाई आतिशबाजी और तालियों की गूंज. शिकागो रेस्तरां होटल्स भरे हुए थे. क्रमशः

(इस धारावाहिक का अंतिम किस्त अगले अंग में...)

साने गुरुजी जयंति पर विशेष आलेख :

साने गुरुजी का स्मरण

फा.किरण लोपीस

कक्षा में पढाते समय मैंने सहज ही बच्चों से एक प्रश्न पूछा, ''श्याम ची आई'' यह पुस्तक पढ़ी है क्या ? या किसीने 'श्याम ची आई' यह चित्रपट देखा है क्या? माथे के भौवें चढाने के बाद कक्षा के बच्चों ने नकारार्थ गर्दन हिला दी. जिस लेखक ने यह पुस्तक लिखी उनका नाम तो जानते हो क्या ? कक्षा की एक लड़की ने उत्तर दिया ''साने गुरुजी''.

वैज्ञानिक क्रांति के मोह जाल में फंसे हुए बालमनों को श्याम की मां या गुरुजी के विचारों में बिलकुल रस नहीं है. मेरे विचार से वैज्ञानिक क्रांति ने संसार को एक नई दिशा दी है. परन्तु अपने परिवार के बालमनों की दिशाभूल न हो, पूरे संस्कारित होकर अपने बच्चे पलें इसके लिए गुरुजी की याद प्रत्येक मां ने परिवार में रखने की जरूरत है. सच देखें तो आज की युवा पीढ़ी के लिए श्याम तथा उसकी मां, आदर्श होनी चाहिए पर न तो आज के युवकों के सामने और पाठशाला के बच्चों के लिए ''यह सिर्फ पुस्तकों में ठीक है'' ऐसी मनोधारणा हो गई है.

'श्याम ची आई' पढकर गुरुजी के शब्दों का पारसमणि स्पर्श जिन जिन हाथों को हुआ उनका जीवन सार्थक हो गया. गुरुजी के प्रत्येक शब्द का अर्थ आकाश खोजता है, पर्वत सी उंचाई, प्राप्त कर सीधा हृदय की धड़कन में हमेशा के लिए बस जाता है. गुरुजी के शब्दों से अपना पूरा व्यक्तिमत्व सर्वांग सुन्दर किए हुए कितने व्यक्तिमत्व सारे महाराष्ट्र में पैदा हुए हैं. इस समृद्ध जीवन में गुरुजी की याद आते ही स्मरण होता है. या जन्मावर, या जगण्यावर शतशः प्रेम करावे. उस मां ने श्याम को अपने जन्म पर तथा अपने जीनेपर प्रेम करना सिखवाया. गुरुजी की याद आते ही सुरेश भट की 'गे माय भू' कविता याद आ गई. कारण गुरुजी के शब्दों ने हम सबके जीवन का भाग्य लेख साकार किया तथा इस मां के दूध से हम सबकी वाणी गीली हो गई. ''श्याम ची आई''पुस्तक में मां-बेटे के हृदय स्पर्शी संवाद जीवन को एक मोड़ देते हैं. इसलिए गुरुजी की याद सतत अपने घर घर में होना आवश्यक है. ❑

'श्याम ची आई' पढने के बाद मरिये का तथा बाल येशु के जीवन पर चिंतन करें तो उसमें बहुत समानता है. अपना बच्चा मंदिर में गुमने पर गद गद हुई पवित्र माता मरिया येरुशलैम में वापिस आती है तब येशू मंदिर में बैठ कर गुरुजनों के भाषण सुन रहा था. यह देखकर मरिया उसे बोली ''बालक तूने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? देख, तेरे पिता और मैं दुःखी होकर तुझे ढूंढते हुए आए हैं.'' यह मां. का हृदय था. साने गुरुजी ने श्याम की आई साक्षात पवित्र मरिया ही होनी चाहिए तथा यह गुरुजी की बातें अपने बच्चों तक पहुंचाना यह वक्त की आवश्यकता है.

''प्रेम अर्थात हृदय का विकास, ज्ञान अर्थात बुद्धि का विकास, शक्ति अर्थात शरीर का विकास'', ऐसा कहनेवाले मातृहृदयी साने गुरुजी तथा उनकी 'श्याम ची आई का स्मरण !'

(सुवार्ता से साभार) **हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य**

समाचार भारती - ६

गांधी निशस्त्रीकरण और विकास : अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन वक्ताओं ने रखे विचार

काउंटर थ्योरी से सुरक्षित नहीं देश

सुरक्षा के नाम पर पड़ोसी मुल्क को परमाणु हथियार बनाता देख खुद भी हथियारों की होड़ में शामिल हो जाना कतई सही नहीं है. काउंटर थ्योरी से कोई देश खुद को ज्यादा दिनों तक सुरक्षित नहीं रख सकता. सुरक्षा की बजाय ये हथियार विश्व में अशांति ही फैला रहे हैं. यही वजह है कि महात्मा गांधी ने कभी काउंटर थ्योरी का समर्थन नहीं किया.

यह बात जस्टिस एके पटनायक ने शनिवार को आनंद मोहन माथुर सभागृह में कही. वे यूनिवर्सल पीस एंड सोशल डेवलपमेंट सोसाइटी के द्वारा गांधी निशस्त्रीकरण और विकास विषय पर अंतरराष्ट्रीय कॉफ्रेंस के दूसरे दिन बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए थे. उन्होंने कहा कि विकास की बात तब की जानी चाहिए जब देश का हर कोना शिक्षा से रोशन हो चुका हो. देश में ज्यादातर बच्चे शिक्षा से दूर हैं. इसकी वजह यह भी है कि कुछ लोगों ने इसे व्यापार बना लिया है.

आर्थिक समस्या ने विश्व को हिला दिया :

अर्थशास्त्री व प्रो.गणेश कावड़िया ने कहा कि विश्व में आर्थिक विकास बेहद तेजी से हुआ है, लेकिन सही दिशा में नहीं होने से नियंत्रण कर पाना मुश्किल है. यूरोपियन व अमेरिकी देशों की अर्थव्यवस्था बिगड़ते ही दूसरे देशों पर बुरा असर नज़र आने लगता है. युवा नौकरियों की दर-दर की ठोकरे खाते हैं. व्यापार मंदा हो जाता है. बेबाग तरीके से हो रहे आर्थिक विकास का दुष्परिणाम यह भी है कि भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिल रहा है. बेलगाम आर्थिक विकास ने लोगों को डिप्रेशन में ला दिया है और यह सब पिछले २० सालों में हुआ है.

दबाव से स्थापित हो रहे परमाणु संयंत्र :

रिसर्च स्कॉलर डॉ.मानसी महंती ने कहा कि सभी देशों पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ने लगा है. इसके चलते भारत में भी परमाणु संयंत्र लगाए जा रहे हैं, जिसका विरोध भी सरकार को झेलना पड़ रहा है. जन आंदोलन होने लगे हैं. परमाणु संयंत्रो के लगने से नुकसान जनता को ही भुगतना पड़ेगा.

अंतरिक्ष का चौधरी बनाना चाहता है अमेरिका :

डेविड चार्ल्स वेब ने कहा कि भारत ने लक्ष्यभेदी मिसाइलें भी अमेरिका से ली हैं. १९५० में तत्कालीन सोवियत संघ के उपग्रह प्रक्षेपण के पश्चात करीब १००० उपग्रह अंतरिक्षा में छोड़े जा चुके हैं. अमेरिका दूसरे देशों को अंतरिक्ष का उपयोग नहीं करने देना चाहता. वातावरण पर अणु अस्त्रों का बुरा प्रभाव पड़ रहा है.

अमेरिका के पास ऐसे हजारों हथियार हैं, जिसे वह दागने को तैयार है. उन्होंने कहा कि अमेरिका का विजन २०२० मिलिट्री को उंचाइयों पर ले जाना है. अमेरिका अंतरिक्ष पर प्रभुत्व कायम करना चाहता है और यह निर्णय करना चाहता है कि अंतरिक्ष का उपयोग कौन करेगा.

नियामक संस्था का होना जरूरी :

रक्षा विशेषज्ञ जी पार्थसारथी ने कहा कि यह ठीक नहीं है कि एक देश हथियारों से विहीन हो और पड़ोसी हथियारों से लैस. महात्मा गांधी ऐसे नेता थे, जिसके नेतृत्व में देश को आजादी मिली. आज एक ऐसी निमायक संस्था की जरूरत है, जिससे परमाणु हथियारों पर रोक लगाई जा सके.

मिसाइल में अमेरिका की दादागिरी :

जे नारायण राव ने कहा कि भारत और चीन, अमेरिका के निशाने पर हमेशा से रहे हैं, यही वजह है कि मिसाइल कार्यक्रम के नाम पर वह एशिया और चीन को घेरना चाहता है जबकि उसका तर्क है कि इससे ईरान, इराक, सीरिया आदि देशों से आने वाले प्रक्षेप्रास्त्रों को वह रोक सकेगा. अमेरिका का यह मिसाइल कार्यक्रम जापान, पोलैंड आदि देशों में शुरू होने वाला है.

गांधी जीवन-शैली सामने लाना चाहता हूं :

गांधी विचारक बनीं मेयर ने कहा कि अहिंसा का रास्ता अपनाते हुए महात्मा गांधी ने अपना पूरा जीवन बिता दिया. इसके बावजूद उन्हें गोली मारी गई. गांधी जी के संघर्ष को लोगों तक पहुंचने के लिए मैं उनकी जीवन-शैली सबके सामने लाना चाहता हूँ. साथ ही उनके विचारों से युवाओं को प्रेरित कर अहिंसा की ओर ले जाना चाहता हूं. काफी हद तक मैं अपने मकसद में कामयाब भी हो चुका हूँ.

अरबों डॉलर खर्च हो रहे हथियारों पर :

भौतिक शास्त्री डॉ.राम श्रीवास्तव ने कहा कि एक तरफ दुनिया में भुखमरी है. कई लोग रोजाना भूखे सोते हैं. दूसरी तरफ अमेरिका जैसे देश अरबों डालर रक्षा पर खर्च कर रहे हैं. यदि यही पैसा गरीबी-भुखमरी और विकास पर खर्च किया जाएं तो दुनिया की तस्वीर बदल सकती है.

इस मौके पर संयोजक आनंद मोहन माथुर, मुकुंद कुलकर्णी, डॉ.ए.ए.अर्बबासी, यासुओ ओगाटा, शारदा मिश्रा, डॉ.उषा तिवारी, डॉ.अनिल भंडारी, बृजेश कानूनगो, आलोक खरे समेत कई लोग मौजूद थे.

सम्मेलन में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा, दिल्ली, बिहार, जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तामिलनाडु आदि राज्यों के अलावा जापान, यूएसए, मिस्त्र, नेपाल, यूके, जर्मनी आदि देशों के प्रतिनिधि भाग ले रहे थे.

ऊंची बिल्डिंग और चमचमाती सड़कें विकास का पैमाना नहीं :

गांधीवादी राधा बेन भट्ट ने कहा कि कुछ चुनिंदा शहरों में ऊंची बिल्डिंग और चमचमाती सड़कों को देखकर विकास कहना सही नहीं है. गरीबी और

असमानता देश से पूरी तरह खत्म नहीं हुई है. गरीबी के पहले हमें असमानता पर बहस करने की जरूरत है, क्योंकि समाज के दोनों छोर पर विकास एक जैसा नहीं हो रहा है. यही कारण है कि समाज के एक वर्ग को सभी सुविधाएं मिल रही हैं और दूसरा वर्ग मूलभूत सुविधाओं के लिए जूझ रहा है. महात्मा गांधी अंतिम व्यक्ति तक आजादी का फायदा पहुंचाना चाहते थे, तो फिर विकास अंतिम व्यक्ति तक क्यों नहीं पहुंचा पा रही है. रोटी, कपड़ा,-मकान के अलावा शिक्षा और स्वास्थ्य भी आज की जरूरत है. जब ये पांचों हर व्यक्ति को मिलेंगे, तभी संपूर्ण विकास कहा जा सकेगा.

समाज की उन्नति में महिला भी देना चाहती है योगदान :

समाजसेवी जनक पलटा मैकगिलीगन ने कहा कि महिलाओं को आज भी पुरुषों की तुलना में समान अधिकार नहीं मिला है. महिना लाएं जब घर अच्छे से चला सकती हैं, तो समाज की उन्नति के लिए उनका योगदान क्यों नहीं लिया जाता है. इन असमानताओं के चलते महिलाओं को हर कदम पर अपनी अलग पहचान बनाना पड़ती है, जिसमें उसकी पूरी जिंदगी खत्म हो जाती है. डॉ. सविता इनामदार ने कहा कि महिलाओं की स्थिति तब ही मजबूत हो सकेगी, जब उनके लिए बनाए कानून को ठोस तरीकों से लागू किया जाए. हर व्यक्ति को अपना दायित्व समझते हुए ऐसे मुद्दों को त्यागना होगा, जो महिलाओं को अंदर से कमजोर करते हैं.

पत्र भारती

सेवा में,

''दिपावली एवं नव वर्ष'' की हार्दिक शुभेच्छा आप के द्वारा प्रेषित पत्रिका 'आंतर भारती' के अक्टूबर २०१३ के अंक की प्राप्ती हुई. पत्रिका पढ़ी अति सुन्दर एवं मन भावन लगी है. पत्रिका में प्रकाशित सम्पदाकीय अति सुन्दर एवं सटीक लगा है अन्य लेख एवं विचारों से भी प्रभावित हुआ हूँ. छोटी पत्रिका लेख-विचार बढ़े उत्तम लिखे गए हैं. ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप की पत्रिका आंतर भारती उच्च शिखर को भविष्य में प्राप्त हो. यही कामना भी है. शेष शुभः

आप का शुभाकांक्षी

डॉ.प्रेमसिंह चेतन,

श्रीरंग सोसायटी, रुम नं.१४, श्री गणेश नगर, पंचकुटीर पवई, मुंबई - ४०००७६

काल परिक्रमा : दिसम्बर - २०१३

०१ दिसम्बर : विश्व एड्स दिवस

०३ दिसम्बर : देशरत्न डॉ.राजेंद्र प्रसाद जन्म दिन (जन्म दिन : ०३-०१२-१८८४-देहावासन २८-०२-१९६३) भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ.राजेद्र प्रसाद का जन्म बिहार के सारण जिलान्तर्गत जीरादेई नामक गाँव में ३ दिसम्बर सन १८८४ ई.को एक सम्भ्रान्त परिवार में हुआ था. ''होनहार बिरवान के होत चीकने पात'' वाली कहावत के अनुसार वे सभी परीक्षाओं में सर्वप्रथम रहे. इन्होंने देश की राजनीति को एक नयी दिशा दी.

०४ दिसम्बर : भारतीय नौ सेना दिवस

१० दिसम्बर : मानवाधिकार दिवस

११ दिसम्बर : संयुक्त राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय बाल-संकट कोष **(U.N.I.C.E.F.)** स्थापना **दिवस यूनीसेफ :** यूनीसेफ की स्थापना ११ दिसम्बर सन १९४६ ई.को हुई. पहले बच्चों के संकटकालीन कार्यों में सहायता प्रदान करना ही ध्येय था, किन्तु आम-सना में सन १९५० ई.में इनके कार्य क्षेत्र में वृद्धि कर दी १ अब यह संगठन विश्वभर के विशेषतः विकसन शील देशों के बच्चों की प्रत्येक आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयत्न करता है. इसका कार्य-क्षेत्र सम्पूर्ण संसार है. इसके मुरव्यतः निम्न कार्य हैं :

i बच्चों के सभी प्रकार के रोगों का निवारण करना.

ii मलेरिया - उन्मूलन,

iii यक्ष्मा - निराकरण

iv प्रसूतिका - गृहों व शिशु - कल्याण केन्द्रों की स्थापना

v दाइयों के प्रशिक्षण - केन्द्रों की स्थापना

vi शिशु - आहार की व्यवस्था

vii दूध - वितरण

viii आकस्मिक घटनाओं (आपदा) भूकम्प, बाढ़ आदि के समय सहायता करना. भारत में 'पल्स पोलियो' के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं.

१४ दिसम्बर : राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस / सीमान्त गाँधी अब्दुल गफ्फारखान जन्म दिवस

२४ दिसम्बर : साने गुरुजी जन्म दिन : २४-१२-१८९९ आंतर भारती के संस्थापक और देश के महान् विचारक साने गुरुजी का जन्मदिन है. जिनकी प्रेरणा राष्ट्र की धरोहर है.

२८ दिसम्बर : भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस स्थापना दिवस / गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस

प्रस्तुति : कौशल किशोर